ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 67-69**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

दलित महिलाओं की मुक्ति आन्दोलन में सावित्री बाई फुले की भूमिका

डॉ0 अनीता कुमारी

एम. ए. पी–एच.डी. (समाजशास्त्र) मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत

Received-09.10.2024, Revised-16.10.2024, Accepted-21.10.2024 **E-mail : akbar786ali888@gmail.com**

सारांशः ***भारत में स्त्रियों की स्थिति में सुधार व उनमें जागरण लाने के कार्य में अनेक समाज सुधारकों में से 'सावित्री बाई फुले' का नाम अग्रणीय है। यदि हम भारत की नारी आंदोलन को समझना चाहते हैं तो हमें सावित्री बाई फुले के जीवन को उनके कार्यों को तत्कालीन समाज के परिपेक्ष्य में रखकर आंकना होगा।***

सावित्री बाई फुले जो दबे–पिछड़े समाज में पैदा हुई नौ वर्ष की अल्पायु में विवाहित हो गयी। घर–गृहस्थी के काम–काज के साथ–साथ कठोर परिश्रम से न सिर्फ स्वयं पढ़ी बल्कि गाँव–गाँव जाकर दीन–हीन दलित और स्त्रियों के लिए पाठशाला खोले।

पाठशाला प्रारंभ करने में संस्थापकों को जितने कष्ट उठाने पड़े उससे कहीं ज्यादा कठिनाई और यातनाएँ सावित्री बाई को पाठशाला चलाने में हुई उनपर अनेक संकट आए। यहाँ तक कि कन्याओं की पाठशाला जानकर कोई भी पुरूष पाठशाला में नौकरी करने को तैयार नहीं था और न ही कोई अपनी लड़की को उस पाठशाला में पढ़ने भेजता।[1]

कुंजीभूत शब्द– मुक्ति आन्दोलन, जागरण, समाज सुधारक, नारी आन्दोलन, अल्पायु, घर–गृहस्थी, कठोर परिश्रम,पाठशाला

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को नायगाँव में हुआ था। नौ वर्ष की अल्पायु में 1840 ई0 में उनका विवाह महान् क्रांतिकारी ज्योतिबा फुले से हुआ। महात्मा फुले उनके जीवन में शिक्षक बन कर आए। 1841 ई0 में पढ़ने–लिखने का प्रशिक्षण उन्हें ज्योतिबा फुले से ही मिला। पूना में रे जेम्स मिचेल की पत्नी नारी शिक्षा की पक्षधर थी। अतः नार्मल स्कूल द्वारा सावित्री बाई फुले व उनकी बुआ सास दोनों को प्रशिक्षण दिया गया। अंग्रेजी ज्ञान होने के बाद सावित्री बाई फुले ने टॉमस क्लार्कसान की जीवनी पढत्री। टॉमस क्लार्कसन, जो नीग्रों पर हुए जुल्मों के विरूद्ध लड़े थे, व कानून बनाने में सफल हुए थे। उनकी जीवनी पढ़कर सावित्री बाई फुले बहुत प्रभावित हुई। वे भारत के नीग्रों (अछूत और स्त्रियाँ) की गुलामी के प्रति बहुत चिंतित थी। उन्होंने भारतीय गुलामों के शोषण का मुख्य कारण 'अशिक्षा' को खोजा।

1848 ई0 में बुधवार पेठ (पूना में) में पहला स्कूल खोला था, जिसमें सावित्री बाई फुले अध्यापिका हुई। वह भारतवर्ष की पहली शिक्षिका थीं किन्तु उनके शिक्षिका बनने पर समाज में प्रखर विरोध हुआ। उन्हें धर्म को डुबाने वाली कहा गया। अश्लील गालियाँ देकर उनका स्वागत किया गया। लोग उनके उपर गोबर, पत्थर आदि फेंकते थे। किन्तु इन सबके बावजूद भी जब सावित्री बाई फुले ने अपना काम बंद नहीं किया तो ससुर द्वारा दबाव डलवाया गया कि यदि सावित्री बाई फुले ने अछूतों को पढ़ाना बंद नहीं किया तो उनकी बयालिस पीढ़ियाँ नरक में जाएगीं। फुले दम्पत्ति ने शूद्रों–अतिशूद्रों और औरतों के बीच शिक्षा की ज्योति जलाकर गुलामी से मुक्ति की राह दिखाई गाँव–गाँव जाकर विद्यालय खोले। एक ओर ऊँची जातियों में बाल–विवाह से हुई विधवाएँ बलात्कार का शिकार होतीं, भ्रूण हत्या करतीं या स्वयं आत्महत्या कर लेतीं तो दूसरी ओर, अछूत औरतें एक बूंद पानी के लिए भी सवर्णों की दया पर जीती।

एक दिन जब सावित्री बाई फुले बच्चों को पढ़ाने पाठशाला जा रही थीं तो उन्होंने देखा रास्ते में कुएँ के पास कुछ औरतें फटे–पुराने कपड़े पहनकर धनी औरतों से मिन्तें कर रही है कि 'हमें मार लो, पीट लो, हमारी मार–मार कर खाल उधेड़ दो, परंतु हमें दो लोटे पानी दे दो। चिलचिलाती धूप में कुएँ से दूर खड़ी इन औरतों को देखकर ऊँची जाति की औरतें हंस रही थी और हंसते–हंसते डोल भरकर पानी उनके उपर फेंक देती। सावित्री बाई फुले यह सहन नहीं कर सकीं। वे उन अछूत औरतों को अपने घर पर ले गयी और अपना तालाब दिखाते हुए बोला, "जितना चाहे पानी भर लो, आज से यह तालाब तुम सबके लिए है।[3]

1848 ई0 में एक तरफ इंग्लैंड में स्त्री शिक्षा की मांग हो रही थी तो दूसरी ओर फ्रांस में मानव अधिकार के लिए संघर्ष चल रहा था। भारत में सावित्री बाई फुले और ज्योतिबा फुले ने शूद्रों, अतिशूद्रों व स्त्री की नींव रख नए युग का सूत्रपात किया। 1849 ई0 में पूना में उस्मान शेख के यहाँ उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा आरंभ की। 1849 ई0 में ही पूना, सतारा व अहमदनगर जिले में अन्य पाठशाला खोलीं। उस जमाने के लोगों की यह धारणा थी कि लड़कियों का पाठशाला जाना और शिक्षा ग्रहण करना, लड़कियों को कुमार्ग की ओर ले जाने वाला एक घृणित कदम है। कई लोग यह मानते थे कि लड़की को पाठशाला में भेजना धर्म के विपरीत है। इस प्रतिकूल परिस्थिति में भी सावित्री बाई फुले अपना काम करती रहीं।[4]

ज्योतिबा राव की कई मित्र थे। जिनकी छोटी–छोटी लड़कियाँ थीं। पहले उन लड़कियों को ही अपनी पाठशाला में लाकर पढ़ाने का निश्चय सावित्री बाई फुले ने किया। वे पाठशाला में उन लड़कियों को रोज घर लौटते समय मिठाई बाँटती थी, यह देखकर कि अब लड़कियाँ पढ़ाई से उब गई हैं, तो वे उन्हें खेलने देती थीं। वे उन्हें खुश रखने की पूरी कोशिश करती थीं। सावित्री बाई के पास केवल दो ही बातें थी एक वात्सल्य और दूसरा लड़कियों की भलाई की अपार इच्छाशक्ति और अपने हँसमुख और खुशमिजाज के कारण वह सभी का दिल जीत लेती थीं।

लड़कियों के पाठशाला में आने के बाद सावित्री बाई सबसे अधिक महत्व इस बात को देती थी कि लड़कियों के सर्वागीण मानसिक विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रयास किए जाएँ। कभी कोई लड़की यदि पाठशाला नहीं आई तो वे इसका पता लगाती कि वह क्योंकि नहीं आयी? उसके बीमार रहने पर उसके घर जाकर दवा वगैरह का इंतजाम करती थी। वे पाठशाला को यथाशक्ति

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

आर्थिक सहायता भी देतीं। इस प्रकार उनमें समाज कल्याण और उसमें आमूल–चूल क्रांतिकारी बदलाव की दृष्टि थी। इसी चलते लोगों के मन में उनके प्रति अपार आदर था।

एक महान शिक्षिका के रूप में सावित्री बाई की ख्याति बढ़ने लगी। धीरे–धीरे लोग खुद–ब–खुद अपनी लड़कियों को पाठशाला भेजने लगे। इस प्रकार वर्ष के अंत तक पाठशाला में शिक्षा पाने वाली लड़कियों की संख्या पच्चीस तक हो गयी जिनमें दस ब्राह्मण, छः मराठा, दो चमार, दो महार, एक मातंग, एक गड़ेरिया, एक जुलाहा, एक साली और एक माली जाति की लड़कियाँ थीं। सन् 1849–50 में पाठशाला में दाखिल लड़कियों की संख्या सत्तर तक बढ़ गयी। इस कारण दो शिक्षकों की नियुक्ति करनी पड़ी।

ज्योतिबा फुले ने 1848 से 1851 के बीच पुणे और अन्य कई स्थानों में लड़कियों की अनेक पाठशालाएँ स्थापित की। पुणे के बुधवाड़ पेठ नामक बस्ती में दिनांक 3 जुलाई 1851 के दिन श्री अन्नासाहब चिपलुनकर के बाड़े में लड़कियों की एक पाठशाला प्रारंभ की। सावित्री बाई का तबादला इस पाठशाला में किया गया। साथ में एक शिक्षक और शिक्षिका भी थे। इस पाठशाला के शुरूआत में अड़तालिस लड़कियाँ थीं। मई 1852 के दिन वेताल पेठ में अस्पृश्य वर्ग की बच्चों के लिए पाठशाला प्रारंभ की गयी। पूरे देश में अस्पृश्य वर्ग के लिए स्थापित की गई यह पहली पाठशाला थी। इस पाठशाला की मुख्याध्यापिका सावित्री बाई ही बनीं।

सावित्री बाई ने ज्योयितबाराव फुल के मार्गदर्शन में स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए 'महिला सेवा मंडल' की स्थापना की थी। सम्पूर्ण भारत में छुआछूत मिटाने के लिए काम करने वाली यह पहली संस्था थी। इस संस्था की ओर से 14 जनवरी 1852 के दिन 'तिल गुड़ समारोह' आयोजि किया गया। महाराष्ट्र में महिलाओं के बीच मकर संक्राति के पर्व पर इस प्रकार 'सक्रांति मिलन' मनाने का पुराना रिवाज आज भी चला आ रहा है। समारोह का आयोजन पत्रिका छपवाकर किया गया। पत्रिका का आलेख निम्न प्रकार था – "दिनांक 13.01.1852 के दिन पुणे के कलक्टर साहब की पत्नी मिसेस जोन्स साहिबा की अध्यक्षता में सार्वजनिक तिल–गुड़ समारोह सम्पन्न होने वाला है। अतः सभी महिलाएँ अपनी बहु–बेटियों के साथ अवश्य उपस्थित हों। समारोह सायं 5 बजे है। जिस भी जाति या धर्म की महिलाएँ आएँगी उन्हें एक ही समान आसन पर विराजमान किया जाएगा। किसी प्रकार का जाति भेद या पक्षपात किए बिना सभी को समान मानकर हल्दी कुमकुम लगाया जाएगा और तिल–गुड़ बाँटा जाएगा।"[5] – सौ0 सावित्री बाई, ज्योतिबाराव फुले, सेक्रेटरी, महिला सेवा मंडल।

इस समारोह में अपना योगदान देने वाली महिलाओं की सूची बहुत बड़ी थी जो कि सावित्री बाई की लोकप्रियता की परिचायक थी। ज्योतिबा राव फुले से प्रेरित अस्पृश्य वर्ग की पाठशालाओं की प्रमुख होने के नाते सावित्री बाई सारे पाठशालाओं की देख–भाल करती थीं। प्रत्येक पाठशालाओं के स्थापना दिवस तथा वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जाता था। 18 फरवरी 1853 को सभी पाठशालाओं का एक ही सम्मिलित पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। यह समारोह पूना कॉलेज के परिसर में हुआ था। इस समारोह में इतने लोग उपस्थित हुए कि इससे पहले इतना बड़ा जन सागर एक स्थान पर कभी एकत्रित नहीं हुआ था। अनेक यूरोपीयन मेहमान भी उपस्थित हुए। रेवेन्यू कमिश्नर रीवज एक बार एक पाठशाला पहुँचे जहाँ सावित्री बाई पढ़ा रही थीं। पाठशाला में अभ्यास चल रहा था। सावित्री बाई बड़ी तन्मय होकर पढ़ा रही थीं। वे बच्चों को शिवाजी महाराज और उनके पिता शाहजी महाराज की वीरता की कहानियाँ सुना रही थीं तथा लड़कियों से प्रश्न पूछ कर उत्तर पा रही थीं। वे कक्षा की पढ़ाई में इतनी एकाग्र हो गयी थी कि रीवज साहब के आने की किसी को आहट तक न हुई।[6]

रीवज साहब बड़े कौतुक और ध्यान से दरवाजे से खड़े–खड़े सब देख रहे थे। पाठ समाप्त होने के समय एक लड़की का ध्यान उनकी ओर जाने पर उसने इशारे से सभी को बताया। सभी लड़कियों ने शांत और अनुशासित ढंग से खड़े होकर साहब का स्वागत किया। साहब यह देखकर बहुत आनन्दित हुए। उन्होंने सावित्री बाई की अंग्रेजी में प्रशंसा की। सावित्री बाई ने भी अंग्रेजी में उनके प्रति आभार व्यक्त कर उनका स्वागत किया और वे साहब के साथ धाराप्रवाह अंग्रेजी में बातें करने लगीं। यह देखकर साहब को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उसी समय अचानक ज्योतिबा राव वहाँ पहुँचे। गदगद् ह्रदय से रीवज साहब ज्योतिबा से कहने लगे, "ज्योतिबा आप बहुत ही भांयशाली हैं जो आपको ऐसी विदुषी और ज्ञानवान पत्नी का साथ मिला।"[7]

सावित्री बाई की लोकप्रियता जिस तरह दलित समाज में तेजी से बढ़ रही थी, उसी प्रकार मराठा समाज के लोग भी सावित्री बाई के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें हर तरह का सक्रिय सहयोग दे रहे थे। किन्तु उनके करीबी रिश्तेदारों ने उनके प्रति रूखा व्यवहार कर उनकी कोई मदद नहीं की। बल्कि इसके उलटे कई रिश्तेदार तो यह फब्तियाँ कसते थे कि 'सावित्री को भिखारिपन की लत लग गयी है।' उन्हें यह समाज सेवा का कार्य बेहूदा लगता है। सावित्री बाई ने स्त्री शिक्षा और समाज कल्याण का बीड़ा अपने कंधे पर उठाया। यह सभी कार्य निश्चय ही नेक और अच्छे काम थे। इसलिए कई लोग उनके इन कार्यों का प्रसंग विशेष पर अभिनंदन करते और उन्हें इस काम में प्रोत्साहित करते थे। ज्योतिबा राव अपनी पत्नी की योग्यता के प्रति आश्वस्त थे। सावित्री बाई के हाथों समाज के हित में जो भी कार्य होते थे उसके लिए वे सावित्री बाई का सम्मान करते थे।

सावित्री बाई के चरित्र का सार उनके प्रत्यक्ष रूप में कार्य करने में था। उनका हरेक कार्य अत्यन्त परोपकारी और मानवतावादी होता था। डेढ़ सौ वर्ष पहले समाज परंपराओं और उनके अंधानुकरण जैसी रूढ़ियों से ग्रस्त था। इस कारण महिलाओं और दलितों को सबसे ज्यादा प्रताड़ित होना पड़ता था। उनका जीवन पशु से भी बदतर था। स्त्री युवावस्था में या बाल्यावस्था में विधवा हो गई तो, उन्हें गुमराह कर अनाचार का शिकार बनाया जाता था। ऐसी मजबूर विधवा महिलाएँ अपनी बदनामी से बचने के लिए गर्भपात करने की कोशिश करती थीं। यदि यह संभव नहीं हुआ तो अनिच्छा से जन्मे बच्चे को क्रूर विवशता से गला घोंट कर मार डालती थी। इस पाशविक अत्याचार पर प्रतिबंध लगाने के लिए अब कुछ न कुछ उपाय करना जरूरी हो गया था।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

विधवा स्त्रियों के हाथों बाल हत्या न हो इस उद्देश्य से सावित्री बाई के नेतृत्व व निगरानी में ज्योतिबा फुले ने 28 जनवरी 1853 को एक बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की। यह गृह अनेक विधवाओं के लिए सुरक्षा घर सिद्ध हुआ। आज इसके 180 वर्ष हो गये हैं। इस स्थान पर ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि यदि अज्ञानवश किसी बाल–विधवा को किसी अत्याचार का शिकार होने से गर्भाधान हो जाए तो वह उस अस्पताल में चुपचाप आकर अपनी प्रसूती करा लें और वह बच्चा वहीं छोड़ जाएँ। इस परोपकारी कार्य में ज्योतिबा फुले को लोकहितवादी गोपाल हरि देशमुख, राव बहादुर मदन, रा.ब. गोंवडे, श्री भंडारकर, श्री नवरंगे, श्री परमानंद ने अमूल्य सहयोग दिया। इस बाल–हत्या प्रतिबंधक गृह में 1873 ई0 तक 66 विधवा महिलाओं की प्रसूति हुई इस प्रसूति गृह को महान समाज सुधारक रानाडे और श्री भंडारकर ने भी बहुत सहायता की। इस केंद्र से युवा विधवा महिलाओं को बहुत आश्रय मिला था। इस केंद्र की पूरी जिम्मेदारी सावित्री बाई उठाती थीं। वे अत्याचार ग्रस्त विधवा महिला को उसकी ब्राह्मण या अन्य जाति का भेदभाव भूल कर समानता और स्नेह से बर्ताव करती थीं। विधवा चाहें तो वहाँ रह भी सकती थीं। इस गृह में मिशनरी के अस्पताल से प्रशिक्षण प्राप्त चार दाईयाँ काम करती थीं। प्रसूति वाली विधवाओं और उनके बच्चों की सेवा सावित्री बाई ह्रदय से करती थीं।

सावित्री बाई फुले ने कुछ कविताएँ लिखीं जो अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी:

अंग्रेजी पढ़ो

स्वावलंबन का उद्योग, ज्ञान धन का संचय करो निरंतर
विद्या के बिना व्यर्थ जीवन पशु जैसा आलसी बन चुप ना बैठो।
विद्या प्राप्त करे शूद्रों–अतिशूद्रों के दुःख निवारण हेतु।
अंग्रेजी का ज्ञान हासिल करने का शुभ अवसर हाथ आया।।
अंग्रेजी लिख पढ़कर जात–पात की दिवारों को ढहा दो।
भट–बामनों की षडयंत्रों के पिटारो को दूर फेंक कर।।
उसे आदमी कहें क्या?
ज्ञान नहीं विद्या नहीं उसे अर्जित करने का जिज्ञासा नहीं।
बुद्धि होकर भी उस पर जो चले नहीं उसे इन्सान कहें क्या?
दे दो ईश्वर बिना काम किये बैठे बिठाए खाट पर।
ढोर डँगर भी ऐसा कभी कहता नहीं।
जिसका कोई विचार–अस्वार नहीं उसे इंसान कहें क्या?
पत्नी बिचारी काम करती रहे और फोकट में वह मौज उड़ाए।
पशु–पक्षी में यह बात होती नहीं ऐसो को इंसान कहे क्या?
दूसरों की जो मदद ना करे सेवा त्याग दया माया आदि।
जिसके पास यह सद्गुण नहीं उसे इन्सान कहे क्या?
पशु–पंछी, बंदर आदमी जन्म मृत्यु सबको ही।
इस बात का ज्ञान जिसे नहीं उसे इन्सान कहे क्या?

विडम्बना है कि इस तरह आज से एक सौ पचास वर्ष पहले समाज में अंधविश्वास, कुरीतियाँ रूढ़िवादी परम्पराओं के विरूद्ध शिक्षा, ज्ञान समता और नारी समानता के लिए लड़ने वाली भारत की पहली शिक्षिका समाज सुधारनेवाली पहली क्रांतिकारी नारी मुक्ति आंदलन की पहली नेता को इतिहास ने, मीडिया ने यहाँ तक की वर्तमान नारी मुक्ति आंदोलन की अग्रणी नेताओं ने भी उनके जीवन उनके योगदान को नहीं पहचाना। हम आज की नारीवादी आंदलोन और सावित्री बाई फुले के समय की नारी आंदोलन की समीक्षा करें तो पायेंगे कि वर्तमान मुद्धों पर नारी आंदोलन ठहर सा गया हैं वे मुद्दे तत्कालीन समाज में सावित्री बाई फुले के नेतृत्व में बखूबी लड़े गये। आज महानगरों में दहेज, भ्रूण–हत्या, यौन–शोषण, बलात्कार, गरीबी के इर्द–गिर्द के मुद्दों पर ही नारी आंदोलन अधिक सक्रिया है।

सावित्री बाई फुले ने समय के भीतरी ढांचे में छेद किया। उन्होंने पितृसत्तात्मक समाज का मूल स्त्रोत ब्राह्मणवाद में ढूँढा। उन्होंने ब्राह्मणवाद से लड़ने का हल, शिक्षा और समाज के ढाँचे में परिवर्तन को माना। उनकी कार्यशैली में सादगीपन थी। वे सादा जीवन, वर–बहु पक्ष को एकत्रिता कर ब्राह्मणी आडम्बर को छोड़ विवाह करने की प्रेरणा देती व कराती भी थीं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भाट व ब्राह्मणों का पर्दाफाश करतीं। उनके काम को जहाँ उच्च जातीय वर्ग का विरोध मिला वहीं निम्न वर्ग एवं समाज का खुलकर साथ मिला।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बी. आर. मणि (2005) : डिब्राह्मणाइजिंग हिस्ट्री, डोमीनेंस एण्ड रेसिसटेंस इन इंडियान सोसायटी, दिल्ली, पृ0–255.
2. रजनी तिलक, (2002) : सावित्री बई फुलेण नई दिल्ली, पृ0–02.
3. वही, पृ0 – 03.
4. वही, पृ0 – 16.
5. वही, पृ0 – 18.
6. वही, पृ0 – 18.
7. वही, पृ0 – 30.

*****